6

भारतीय वाद्यों का सामान्य वर्गीकरण

(तानपुरा बजाने की तकनीक और बनावट का विस्तृत अध्ययन)

भारतीय संगीत संसार में संगीत की सबसे प्राचीन और महत्त्वपूर्ण प्रणालियों में से एक है। यद्यपि औपचारिक रूप से हम इसके जन्म का संबन्ध वैदिक काल से मानते हैं अर्थात 4थी शताब्दी ई.पू.य परंतु कुछ प्रमाण इसकी उपस्थिति बहुत पहले से दिखाते हैं। पुरातत्त्व खुदाइयों से हमें प्राप्त भारतीयों द्वारा प्रयुक्त विभिन्न प्रकार के संगीत वाद्यों के चिह्न प्राप्त हुए हैं, जो लाखों वर्ष पहले के हैं। संपूर्ण भारत में खोजयात्रा से सैंकड़ों वाद्यों का पता चलेगा जो तंत्री, वायु और थापदार समूहों से संबन्धित हैं। प्रत्येक वाद्य भिन्न आकार, धवनि और बजाने की तकनीक युक्त हैं। लकड़ी, बांस, धातु और मिट्टी से बने वाद्य हमारे पूर्वजों की संगीत के प्रति रुचि और विभिन्न प्रकार के वाद्य बनाने और बजाने की तकनीक में कुशलता दिखाते हैं। संगीत वाद्य अमीर और गरीब, दोनों के हाथ में दिखाई देते थे। यद्यपि वीणा, तानपुरा और तबला जैसे प्रसिद्ध और मूल्यवान वाद्य राजसी महलों और बड़ी कोठियों में मिलते थे; तुंतुना, एकतार, बांसुरी और अन्य साधारण ढोल जैसे साधारण और सस्ते वाद्य गरीबों की झोंपड़ी में पाये जाते थे।

उद्देश्य

इस पाठ का अध्ययन करने के पश्चात विद्यार्थीः-

- भारतीय वाद्य संगीत की मूल विशेषतायें बता पायेगा
- संगीत वाद्यों के जन्म और विकास का विवरण दे पायेगा
- भारत के विभिन्न संगीत वाद्यों को पहचान पायेगा
- उनके वर्गीकरण के अनुसार प्रत्येक संगीत वाद्य को पहचान पायेगा

6.1 भारतीय संगीत वाद्यों की निजी विशेषता

चूंकि भारतीय संगीत महाकाव्य और पुराणों जैसे पौराणिक कथाओं और प्राचीन ग्रंथों का मिश्रण

टिप्पणी

है, इसके वाद्य देवी, देवताओं और अन्य सदाचारी दिव्य व्यक्तियों से संबन्धित हैं।

वीणा, वेणु, मृदंग जैसे कुछ वाद्य देवी सरस्वती, भगवान कृष्ण और नंदी से संबन्धित हैं, जबकि महाति, कच्छपी और तुंबरु जैसे कुछ वाद्य उनके प्रस्तावक के प्रतिरूप हैं। संगीतज्ञ इन वाद्यों की उत्तम संगीत प्राप्त करने के लिये कई अवसर पर पूजा भी करते हैं।

भारतीय संगीत वाद्यों की कुछ प्रमुख विशेषतायें हैं। उनमें से अधिकतर इस प्रकार विकसित हुई हैं कि प्रत्येक स्वर पर सूक्ष्म सजावटी स्वर भी बजाये जा सकते हैं। यह प्रचलन चलता रह सकता था यदि भारतीय संगीत गमक को अधिक महत्त्व देना आरंभ करता। केवल इसी कारण याज और हार्प के कई प्रकार जैसे प्राचीन वाद्य प्रयुक्त नहीं होते। पियानो, हार्मोनियम और क्लेरिनेट जैसे चाबी युक्त वाद्य भारत में इसी कारण प्रसिद्ध नहीं हुए। भारतीय संगीत मेलडी पर आधारित है जिसमें संगीत स्वर एक स्वर से दूसरे स्वर की ओर विशेष स्वरों पर हल्का कंपन देते हुए बढ़ते हैं. चाबी युक्त वाद्यों में यह संभव नहीं है क्योंकि वे संगीत स्वर या स्वरों के मिश्रण को निध ारित अंतराल में बजा सकेंगे और सूक्ष्म गमकें और श्रुतियां जो केवल भारतीय विचारधारा में राग भाव ला सकती हैं उन्हें प्रस्तुत करने योग्य नहीं हैं।

पाठगत प्रश्न 6.1

1. देवी- देवताओं से संबन्धित कुछ वाद्यों के नाम बताइये।
2. कुछ वाद्यों के नाम बताइये जो उनके प्रस्तावकों के प्रतिरूप हैं।
3. भारतीय संगीत वाद्यों की कुछ प्रमुख विशेषतायें क्या हैं?
4. विदेशी वाद्य भारत में लोकप्रीय क्यों नहीं हुए?

6.2 संगीत वाद्य बनाने के लिये प्रयुक्त सामग्री

वाद्यों को बनाने के लिये विभिन्न प्रकार की सामग्री का उपयोग होता है जैसे: लकड़ी, पशु चर्म, धातु, मिट्टी आदि। बांस और कोमल सामग्री के होते हुए भी जैकवुड, ब्लैक वुड, रोज वुड, खदिरा लकड़ी, हिमालय चीड़, तुमुक्कु आदि पेड़ों से प्राप्त लकड़ी काम में ली जाती है। सोना, चांदी, कांस्य, तांबा और लोहा धातु साम्राज्य से तथा भेड़, बछड़े, भैंस का चर्म और घोड़े की पूंछ के बाल तथा हाथी जैसे जानवरों की हड्डीयां और दांत कुछ वाद्यों को बनाने के काम आते हैं। प्राचीन समय में यह समझा जाता था कि मृदंग मिट्टी से बना है जैसा कि उसके नाम से प्रतीत होता है तथा मिट्टी का घड़ा जिसे घटं कहते हैं एक विशेष प्रकार की मिटी से बना होता है। मृदंग के दांये सिरे पर एक काली लेयी जो मैंगनीज धूल, उबला हुआ चावल और इमली के रस से बनी होती है लगाई जाती हैय प्रस्तुति के समय उसके बायें सिरे पर एक सूजी और पानी की बनी लेयी लगाई जाती है और बाद में हटा दी जाती है। वीणा की सारिकाओं को स्थापित करने के लिये मोम का प्रयोग किया जाता है। इसी प्रकार तानपुरे, वीणा और सितार के तुंबे एक

टिप्पणी

सब्जी जिसे कद्दु कहते हैं उसके गूदे को हटाकर सख्त और गुंजायमान बनाने के लिये संशोधित किया जाता है।

संगीत वाद्यों के निर्माण के लिये प्रयुक्त होने वाली लकड़ी, बांस और रीड विस्तृत उपचार प्रक्रिया से गुजरते हैं। पचास साल से पुराने पेड़ के तने को काट कर उसे सख्त बनाने के लिये वाद्य के ढांचे को आकार देने से पहले उसे सूर्य की रोशनी और मिट्टी के नीचे लंबे समय के लिये सुरक्षित किया जाता है। जब वीणा, गोटु वाद्यं और तानपुरा बनाये जाते हैं, तो भिन्न भागों जैसे तुंबा, डांड और सिरे के लिये उसी पेड़ की लकड़ी प्राप्त करने के लिये विशेष ध्यान रखना पड़ता है जिससे धवनि और गूंज की गुणवत्ता बनी रहे। वाद्य- निर्माण एक बहुत बारीक और जटिल कला है अत: शिल्पकार को प्रयुक्त सामग्री की गुणवत्ता और धवनि के सिद्धांतों का गहरा ज्ञान होना आवश्यक है। वाद्य बनाने के लिये प्रसिद्ध स्थान तंजौर, तिरुवनंतपुरम, मनमदुरई, चेन्नई तथा बेंगलुरु हैं।

पाठगत प्रश्न 6.2

1. संगीत वाद्य बनाने के लिये कौन से पेड़ों से लकड़ी प्राप्त होती है?
2. मृदंगं के दायें सिरे पर कौन सी लेयी लगाई जाती है?
3. वीणा की सारिकाओं को स्थापित करने के लिये क्या वस्तु प्रयुक्त होती है?
4. संगीत वाद्य बनाने के लिये कौन से स्थान प्रसिद्ध हैं?

6.3 विदेशी वाद्य

भारतीय जो अपनी सहनशीलता, आतिथ्य के लिये प्रसिद्ध हैं, कई धर्मों, धर्म प्रचारकों और व्यापारियों, जो शासक बन गये, को लंबे समय से अपनाते आये हैं और उनके साथ कई भाषायें और संस्कृति को भी अपनाया है। उसी प्रकार वायलिन, मेंडोलिन, सेक्सोफोन, गिटार, क्लेरिनेट और हार्मोनियम को अपने संगीत का भाग बना कर अपना लिया। इस संदर्भ में बालुस्वामी दीक्षितर और वेदीवेलु के प्रयत्न सराहनीय हैं। वायलिन के अतिरिक्त अन्य वाद्यों ने भारतीय संगीत के क्षेत्र में केवल 20वीं शताब्दी के मध्य से प्रवेश किया। ऐसा विश्वास है कि इनमें से कुछ वाद्य भारत में पहले से ही थे। तथापि यह स्पष्ट है कि विदेश से ताल वाद्य नहीं अपनाये गये। हमने इन वाद्यों में कुछ सूक्ष्म परिवर्तन किये जिससे इन पर हमारे संगीत के साथ सरलता और पूर्णता से अभ्यास किया जा सके। जबकि हमने वायलिन के तार और बनाने की तकनीक में परिवर्तन किया है, बहुत प्राचीन भारतीय वाद्य गोटुवाद्यं की भांति गिटार एक वस्तु - कोण सहित बजाई जाती है।

पाठगत प्रश्न 6.3

1. हमारे संगीत में कौन से विदेशी वाद्य अपनाये गये हैं?
2. भारतीय संगीत में वायलिन के परिचय के लिये कौन उत्तरदायी है?
3. भारतीय संगीत में वायलिन के अतिरिक्त वाद्य कब प्रचलित हुए?

6.4 वर्गीकरण

सामान्यतया बहुत प्राचीन समय से संगीत वाद्यों का वर्गीकरण चार प्रकारों में हुआ था, यथा ''ततं, अवनधं, सुषिरं तथा घनं''। भरत, मतंग, नारद, शारंगदेव और अन्य संगीत विद्वानों ने इस वर्गीकरण का अपनी उदाहरण सहित ख्रतियों में समर्थन किया है।

'ततं चौव अवनधं च घनं सुषिरं एव च चतुर्विधं तु विज्ञेयमातोद्यं लक्षणान्वितं'

6.4.1 तत वाद्य या तंत्री वाद्य (कोर्डोफोन)

तत वाद्य या तंत्री वाद्य वे हैं जिनमें तारों में कंपन पैदा करके धवनि उत्पन्न की जाती है। तंत्री वाद्यों के प्रकारों में कई तरह से संगीत बजाया जा सकता है। इनमें कंपन उत्पन्न करने के तरीके के अनुसार कई प्रकार हो सकते हैं:

1. खींचने वाले वाद्य वे हैं जिनमें कोण या अंगुलियों से कंपन पैदा करके धवनि उत्पन्न की जाती है। इस प्रकार के उदाहरण वीणा, गोट्टूवाद्यं, सितार, सरोद, गिटार, तंबुरा, एकतार और दोतार हैं। ये नखज भी कहलाते हैं।
2. गज प्रकार वे हैं जिनमें ध्वनि या कंपन गज द्वारा उत्पन्न होते हैं। उदाहरण वायलिन, सारंगी और दिलरुबा हैं। इन्हें धनुर्ज भी कहते हैं।
3. खींचने और गज प्रकारों का वर्गीकरण उनमें भी किया जा सकता है जिनमें साधारण अंगुलियों का बोर्ड हो। यहां स्वर स्थान बताने के लिये सारिकायें नहीं होती हैं। उदाहरण के लिये वायलिन, गोट्टुवाद्यं आदि। दूसरा प्रकार सारिकाओं सहित है जो वीणा, सितार आदि में होता है।
4. तंत्री वाद्य तानपुरा, तुंतुना, एक तार और दो तार की भांति भी हो सकते हैं जहां स्वर खुले तारों पर बजाये जाते हैं। यहां तार की संपूर्ण लंबाई कंपन करती है और बांये हाथ की अंगुलियों का प्रयोग नहीं किया जाता है। ये वाद्य सामान्यतया श्रुति संगत देने में प्रयोग किये जाते हैं।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 6.4

1. संगीत वाद्य कितने भागों में विभाजित हैं और वे कौन से हैं?
2. तत वाद्य अथवा तंत्री वाद्य क्या है?
3. तंत्री वाद्य किस प्रकार विभाजित हैं?
4. सब प्रकार के तंत्रीवाद्यों का एक उदाहरण दीजिये।

6.4.2 फूंक से बजने वाले वाद्य अथवा सुषिर वाद्य (एयरोफोन)

सुषिर वाद्य अथवा फूंक से बजने वाले वाद्य वे हैं जिनमें नली के अंदर हवा के कालम के कंपन द्वारा ध्वनि उत्पन्न होती है। नली में हवा के झोंके के प्रवाह द्वारा हवा के कालम में कंपन उत्पन्न होता है।

सुषिर वाद्य दो प्रकार के हैं:

1. वे जहां वादक की श्वास द्वारा हवा पहुंचाई जाती है, जैसे बांसुरी, नागस्वरं, कोंबु, एक्कलं, शंख, मगुदी और अन्य।
2. वे जिनमें हवा सामान्यतया कुछ यांत्रिक साधनों द्वारा पहुंचाई या छोड़ी जाती है, जैसे हार्मोनियम और पियानो में।

पहला फिर उनमें विभाजित होता है जिनमें श्वास को मुख और नाक द्वारा छोड़ा जाता है। प्राचीन समय में संगीत वाद्य बहुत दिव्य समझे जाते थे और वाद्य का मुख से स्पर्श प्रदूषित समझा जाता था।

मुख से बजाने वाले पुन: दो प्रकार के हैं:-

1. जिनमें हवा वाद्य की दीवार पर बने सुराख द्वारा छोड़ी जाती है जैसा कि बांसुरी में होता है
2. वे जिनमें हवा कंपनशील रीड या मुख भाग द्वारा छोड़ी जाती है जैसे नागस्वरं, शेहनाई, मुख वीणा, क्लेरिनेट और ओबो में होता है

कुछ सुषिर वाद्यों में श्रुति वाद्य के साथ स्थित होती है, उदाहरण- मगुदी जिसमें दो नलियां होती हैं य एक श्रुति उत्पन्न करने के लिये और दूसरी संगीत के लिये। ये नलियां श्रुति नादि और स्वर नादि कहलाती हैं। इन्हें मिश्रित सुषिर वाद्य कहते हैं। नदुनकुजल भी इस समूह के अंतर्गत आता है।

पाठगत प्रश्न 6.5

1. सुषिर वाद्य क्या हैं?
2. सुषिर वाद्यों का वर्गीकरण किस प्रकार किया गया है?
3. नाक से बजने वाले वाद्यों का प्रचलन कैसे हुआ?
4. मगुदी वाद्य में दो नलियां कौन सी हैं?

6.4.3 ताल वाद्य या अवनद्ध वाद्य (मेंब्रनोफोन)

अवनद्ध वाद्य या ताल वाद्य वे हैं जिनमें धवनि खींचे हुए चर्म के कंपन से या दो ठोस धातु या लकड़ी के खंडों को मिलाकर बजाने से उत्पन्न होती है। ताल वाद्य सामान्यतया संगीत की गति को नियंत्रित करने के लिये प्रयुक्त होते हैं।

बजाने के तरीके के आधार पर ताल वाद्यों का वर्गीकरण इस प्रकार हैरू

1. वे जो दो हाथों से बजाये जाते हैं, उदाहरण: मृदंगं।
2. वे जिनके सिरे दो डंडियों से बजाते हैं, उदाहरण: डमरं, नगारा।
3. वे जिनका एक सिरा हाथ से तथा दूसरा डंडी से बजाया जाता है, उदाहरण: थाविल।
4. वे जिनमें वाद्य के केवल एक ओर हाथ या डंडी से बजाया जाता है, जैसे खंजीरा, इडैक्का और चेंटा।

पाठगत प्रश्न 6.6

1. अवनद्ध वाद्य या ताल वाद्य क्या हैं?
2. ताल वाद्यों का वर्गीकरण किस प्रकार होता है?
3. उन वाद्यों के नाम बताइये जो केवल एक ओर बजाये जाते हैं।
4. उन वाद्यों के नाम बताइये जो दोनों हाथों से बजाये जाते हैं।

6.4.4 घन वाद्य (इडियोफोन)

धातु या पत्थर के बने कई करताल वाद्य लय रखने के लिये प्रयुक्त होते हैं। उदाहरण : जलरा, तालं, ब्रह्मताल, नट्टुवा तालं, इल्लत्तालं तथा अन्य। जलरा भजन और कलाक्षेपं में प्रयुक्त होता

टिप्पणी

है। ब्रह्मतालं, जो आकार में बड़ा होता है, मंदिर के धार्मिक कर्मों में प्रयुक्त होता है। नट्टुवा तालं नृत्य शिक्षकों द्वारा प्रयुक्त होता है तथा इल्लत्तालं कथकली नृत्य का भाग है। सेमक्कालं की भांति घंटे मंदिर या शव यात्रा के समय प्रयुक्त होते हैं। चीपला या कस्टानेट कथकलाक्षेपं से संबन्धित हैं। मिट्टी के घड़े भी जो कई धातुओं से मिली हुई मिटी से बनाये जाते हैं लय रखने के लिये प्रयुक्त होते हैं। यह विशेष वाद्य घटं कहलाता है। संगीतज्ञ इस वाद्य को अपनी गोद में रख कर दोनों हाथों से बजाते हैं। ये सब घन वाद्य हैं तथा ताल वाद्य समूह से संबन्धित हैं।

पाठगत प्रश्न 6.7

1. घन वाद्य क्या है?
2. विभिन्न अवसरों पर प्रयुक्त होने वाले घन वाद्यों के उदाहरण दीजिये।
3. चीपला या कस्टानेट किस प्रकार के कला रूप से संबन्धित हैं?
4. सेमक्कालं की भांति घंटे किन अवसरों पर प्रयुक्त होते हैं?

6.5 श्रुति वाद्य- ड्रोन वाद्य

श्रुति वाद्य वे संगीत वाद्य हैं जो किसी भी प्रस्तुति के लिये श्रुति संगत प्रदान करते हैं- गायन, नृत्य या वाद्य संगीत सभा गान। श्रुति वाद्य गाने या बजाने वाले को मुख्य स्वर या आधार षड्ज देते हैं। यह सभा गान का एक आवश्यक भाग है। श्रुति वाद्य प्रस्तुति को स्थिरता और संपन्नता प्रदान करते हैं और संगीतात्मक वातावरण उत्पन्न करने में प्रमुख सहायक होते हैं। कहा जाता है कि महावैद्यनाथ अय्यर जैसे महान संगीतज्ञ को अपने तंबुरा वादक को मंच पर प्रस्तुति के वास्तविक समय से ड्डक मिनट पहले ही वाद्य बजाना आरंभ करवा देने की आदत थी, जिससे श्रोतागण संगीत को सुनने से पहले उसके समस्वर हो जाते थे। सभागृह के श्रुति से भरपूर हो जाने से कलाकार रूप में आने के लिये बिना अधिक समय लिये अपनी प्रस्तुति दे सकता है।

श्रुति वाद्य गायक की आवाज के सर्वाधिक अनुकूल ऊंचाई के साथ मिलाये जाते हैं। वह उस श्रुति का चयन करने के लिये स्वतंत्र है जो उसे बिना किसी प्रयत्न के तीन स्थाइयों में गाने योग्य बनायेगी। एक वादक एकल प्रस्तुति करते हुए अपने वाद्य को उस ऊंचाई तक मिलाने के लिये स्वतंत्र होता है जिसमें वह सरलता से बजा सकेगा। वायलिन वादक या मृदंग वादक जैसे संगतकार को अपने वाद्य को प्रमुख कलाकार की स्वर की ऊंचाई तक मिलाना होता है। पाश्चात्य संगीत में ऐसा नहीं है, वहां संगीत एक विशेष ऊंचाई या की के लिये होता है और सभी प्रस्तुतकर्ताओं को इस ऊंचाई के अनुसार चलना होता है।

भारतीय सभा गान में श्रुति वाद्य प्रस्तुति के आरंभ से अंत तक बजते रहते हैं। श्रुति वाद्य का निरंतर बजना नीरसता की भावना उत्पन्न नहीं करता है बल्कि यह संगीत को संपन्न बनाता है और संपूर्ण प्रस्तुति को स्थिरता प्रदान करता है। कुछ वाद्यों में वाद्यों की ऊंचाई समायोज्य नहीं

होती हैं, जैसे बांसुरी। श्रुति वाद्य के अभाव में जब भी एक नया गीत या राग आरंभ होते हैं तो ऊंचाई कुछ सीमा तक ऊपर या नीचे जा सकती है क्योंकि यहां कोई मानक नहीं है। अत: यह अति आवश्यक है कि श्रुति वाद्य सभी प्रकार की संगीत प्रस्तुतियों में प्रयुक्त हो।

पाठगत प्रश्न 6.8

1. श्रुति वाद्य क्या है?
2. सभा गान की पूरी अवधि में भारतीय संगीतज्ञों को श्रुति वाद्यों की संगत की आवश्यकता क्यों है?
3. भारतीय संगीत सभा गानों में श्रुति वाद्यों का क्या उपयोग है?
4. पाश्चात्य संगीत के लिये एक विशेष श्रुति वाद्य की आवश्यकता क्यों नहीं है?

6.5 तंबुरा

भारतीय संगीत में तंबुराधतानपुरा एक शास्त्रीय श्रुति वाद्य है। इस वाद्य की निरंतर संगत के बिना कोई संगीत कार्यक्रम पूर्ण नहीं हो सकेगा। दक्षिण भारतीय तंबुरा पूर्णतया लकड़ी का बना होता हैय जबकि उत्तर भारतीय तंबुरे का तुंबा कद्दु का बना होता है और यह वाद्य हाथी दांत या अन्य बहुमूल्य वस्तुओं से सजाया जा सकता है। लकड़ी के एक टुकड़े का बना तंबुरा उत्तम धवनि देता है, परंतु ऐसी लकड़ी नहीं मिलने के कारण भिन्न भाग उसी लकड़ी से बनाकर जोड़ दिये जाते हैं। तंबुरा के विभिन्न भाग इस प्रकार हैं:

1. कदम अथवा तुंबी, ब्रिज, नागपासं, मनके (ट्यूनिंग बीड) तथा जीवाली अथवा जवारी
2. डांड और ग्रीवा
3. मिलाने की खूंटियां और तार

1. **कदम अथवा तुंबी**- यह वाद्य का संवेदनशील भाग है। वाद्य का यह भाग लकड़ी के बड़े टुकड़े से बनाया जाता है और खोद के उसी की पतली चादर से ढका जाता है। यह भाग तारों के खींचे जाने पर उत्पन्न धवनि को गुंजायमान बनाता है क्योंकि यह खोखला है। चार तार नागपासं से बंधे होते हैं जो इसकी तुंबी के नीचे स्थित है और इसके ऊपर स्थित ब्रिज के ऊपर से होते हुए जाते हैं। कुछ पतले धागे इन तारों को ब्रिज के धातु भाग को बिना स्पर्श किये कम्पन देने के लिये प्रयुक्त होते हैं, जिससे वाद्य में अच्छी गूंज उत्पन्न होती है। इसे उत्तर में जीवाली अथवा जवारी कहते हैं।
2. डांड और ग्रीवा- लकड़ी के बाहर निकले हुए भाग द्वारा डांड तुंबी से अलग होती है। यह लंबा भाग भी खोखला बनाया जाता है और उसी लकड़ी की पतली चादर से ढका जाता है।

टिप्पणी

3. ग्रीवा पिछला भाग है जिसमें चार मिलाने की खूंटियां सुराखों में लगी होती हैं। इन खूंटियों में चार तार बांधे जाते हैं जिन्हें खूंटियों को कसकर और ढीला करके अनुकूल बनाया जा सकता है। इन तारों का दूसरा हिस्सा नागपासं से बांधा जाता है। सामान्यतया तारों को मध्य पंचमं, दो तार षड्जं-सारनी, अनुसारनी और अंत में मंद्र षड्जं के क्रम में मिलाया जाता है।

पाठगत प्रश्न 6.9

1. तानपुरे के भिन्न भाग कौन से हैं?
2. तानपुरे में 'कदम' क्या है?
3. तानपुरे का सबसे लंबा भाग क्या कहलाता है?
4. एक तानपुरे में नागपासं क्या है?
5. एक सामान्य तानपुरे में कितने तार होते हैं?

आपने क्या सीखा

संगीत वाद्यों में भारत एक संपन्न देश है। ऐतिहासिक काल से पहले कई प्रकार के संगीत वाद्य जीवन के विभिन्न अवसरों पर प्रयुक्त होते थे। आरंभिक काल से संगीत वाद्य वाद्यों की प्रकृति और बजाने के तरीके के अनुसार तत, अवनद्ध, सुषिर और घन, इन चार प्रकारों में विभाजित हैं। भारतीय संगीत ने कई विदेशी वाद्यों को अपने अनुसार ढाला है और अपनी प्रणाली में सम्मिलित किया है, जैसे वायलिन, हारमोनियम, मेंडोलिन इत्यादि।

भारतीय संगीत संसार में सबसे प्राचीन संगीत प्रणालियों में से एक है, जो वैदिक काल में उत्पन्न हुआ है ऐसा विश्वास है; यह कई प्रकार से बहुत संपन्न है जैसे राग, ताल, रचनायें और वाद्यों में भी। विकास के क्रम में इसके कुछ सिद्धांत स्थापित हुए जो इसे अन्य संगीत प्रणालियों से विशिष्ट बनाता है। इसकी रचनाओं का साहित्य प्रकृति में शांत और पवित्र है और संगीत के लिये गमक- कुछ सूक्ष्म सजावटी तत्त्व प्रयुक्त हुए हैं, जिससे हार्मोनियम, पियानो, अकोर्डियन आदि जैसे कुछ वाद्य संगीत दृश्य से लुप्त होने के लिये बाध्य हुए।

जैसे ही मानव ने प्रकृति, जानवरों या पक्षियों का अनुकरण करने वाले वाद्यों का प्रयोग आरंभ किया, उसने वाद्य बनाने के लिये बांस, लकड़ी के विशेष प्रकार के लठ्ठे, कुछ जानवरों का चर्म और खनिज पदार्थ जैसे प्राकृतिक पदार्थ प्राप्त किये। कुछ जानवरों के दांत और सींग भी बहुत से वाद्यों के भाग बनाने में प्रयुक्त होते हैं। भारतीय संगीत के विविध वाद्य जैसे वीणा, मृदंग, बांसुरी, करताल वाद्य इत्यादि को चार प्रकारों में विभाजित किया जाता है, यथा (तत, अवनद्ध, घन तथा सुषिर। प्रत्येक वाद्य का पुराण के किसी दिव्य चरित्र के साथ कुछ संबन्ध होने से ये वाद्य भारतीय पौराणिक कथाओं का आवश्यक भाग हो गये। हमारे पूर्वजों ने विभिन्न

सभ्यताओं के विदेशी वाद्य अपनाये हैं। तंत्री और सुषिर वाद्यों के प्रकार मेलडी संगीत उत्पन्न करते हैं- अवनद्ध और घन वाद्य पूर्व वर्णित वाद्यों और गायन की लययुक्त संगति के लिये बजाये जाते हैं।

'तानपुरा' भारतीय संगीत की अन्य विशेषता है जो दूसरे वाद्यों और गायन के लिये आधार स्वर प्रदान करता है। भारतीय संगीत में दूसरे प्रकार के संगीत की तुलना में सभा गान के मध्य आंदोलन संख्या परिवर्तित नहीं होती है। तानपुरा संगीत सभा गान की पूर्ण अवधि में गूंज प्रदान करने के उद्देश्य को पूरा करता है।

पाठांत प्रश्न

1. संगीत वाद्यों का उदाहरण सहित विस्तारपूर्वक वर्गीकरण कीजिये।
2. तानपुरा बजाने की तकनीक और बनावट का संक्षेप में वर्णन कीजिये।
3. वाद्यों के अवनद्ध प्रकार बनाने के लिये प्रयुक्त सामग्री बताइये।
4. तंत्री वाद्यों के विभिन्न प्रकारों के विषय में लिखिये।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

6.1

1. वीणा, वेणु, मृदंगं कुछ वाद्य हैं जो दवताओं से संबन्धित हैं।
2. महती, कच्छपि, तुंबुरु कुछ वाद्य हैं जो अपने प्रस्तावक का प्रतिरूप हैं।
3. भारतीय संगीत वाद्य कुछ इस प्रकार विकसित हैं कि वे प्रत्येक स्वर पर कुछ अलंकार एक के बाद एक मधुर ढंग से बजा सकते हैं।
4. क्योंकि विदेशी वाद्य गमक अथवा सूक्ष्म अलंकार नहीं बजा सकते हैं।

6.2

1. संगीत वाद्य बनाने के लिये जैकवुड, ब्लैक वुड, रोज वुड, खदिरा लकड़ी, हिमालय चीड़, तुमुक्कु आदि पेड़ों से प्राप्त लकड़ी काम में ली जाती है।
2. मृदंगं के दांये सिरे पर एक लेयी जो मैंगनीज धूल, उबला हुआ चावल और इमली के रस से बनी होती है लगाई जाती है।
3. वीणा की सारिकाओं को स्थापित करने के लिये मोम का प्रयोग किया जाता है।
4. संगीत वाद्य बनाने के लिये तंजौर, तिरुवनंतपुरम, मनमदुरई, चेन्नई तथा बेंगलुरु प्रसिद्ध स्थान हैं।

टिप्पणी

6.3

1. वायलिन, मेंडोलिन, सेक्सोफोन, गिटार, क्लेरिनेट और हार्मोनियम विदेशी वाद्य हैं जो हमने अपनाये हैं।
2. बालुस्वामी दीक्षितर और वेदीवेलु ने भारतीय संगीत में वायलिन अपनाया है।
3. केवल छ्ठवीं शताब्दी के मध्य में दूसरे वाद्य प्रसिद्ध हुए।

6.4

1. भारतीय संगीत वाद्य तत, अवनद्ध, सुषिर और घन, इन चार प्रकारों में विभाजित हैं।
2. तत वाद्य या तंत्री वाद्य वे हैं जिनमें तारों में कंपन पैदा करके धवनि उत्पन्न की जाती है।
3. तंत्री वाद्य खींचने वाले वाद्य, गज, साधारण अंगुलियों का बोर्ड, सारिकाओं सहित आदि में विभाजित हैं।
4. सितार, वीणा पहला प्रकार, वायलिन, सारंगी दूसरा प्रकार, सरोद, तानपुरा तीसरा प्रकार और गिटार चौथा प्रकार।

6.5

1. सुषिर वाद्य अथवा नूंक से बजने वाले वाद्य वे हैं जिनमें हवा के कालम के कंपन द्वारा धवनि उत्पन्न होती है।
2. दोय वे वाद्य जिनमें मूंह से हवा भरी जाती है, जैसे बांसुरी और वे जिनमें हवा यांत्रिक साधनों से भरी जाती है जैसे हार्मोनियम।
3. नाक द्वारा फूंके वाद्य इस विश्वास के कारण प्रयुक्त हुए क्योंकि होठों का स्पर्श प्रदूषित समझा जाता था।
4. दो नलियां श्रुति नादि और स्वर नादि हैं।

6.6

1. अवनद्ध वाद्य या ताल वाद्य वे हैं जिनमें ध्वनि खींचे हुए चर्म के कंपन से उत्पन्न होती है।
2. इनके बजाने के तरीके के आधार पर ताल वाद्य चार प्रकारों में विभाजित हैं: वे जो केवल एक ओर से बजाये जाते हैं, वे जो दोनों ओर से बजाये जाते हैं, वे जिनका एक सिरा हाथ से तथा दूसरा डंडी से बजाया जाता है और वे जिनके सिरे दो डंडियों से बजाते हैं।
3. खंजीरा, इडैक्का और चेंटा।
4. मृदंगं, घटं इत्यादि।

6.7

1. घन वाद्य धातु या पत्थर के बने लयात्मक वाद्य हैं।
2. जलरा, ब्रह्मताल, इल्लत्तालं, नट्टुवा तालं, इल्लत्तालं आदि।
3. चीपला या कस्टानेट कथकलाक्षेपं से संबन्धित हैं।
4. सेमक्कालं की भांति घंटे मंदिर या शव यात्रा के समय प्रयुक्त होते हैं।

6.8

1. श्रुति वाद्य वे संगीत वाद्य हैं जो भारत में सभी प्रकार के संगीत सभा गानों में श्रुति संगत के लिये प्रयुक्त होते हैं।
2. श्रुति वाद्य संगीत प्रस्तुति को स्थिरता और संपन्नता प्रदान करते हैं और संगीतज्ञ को मूल ऊंचाई से न हटने में सहायक होते हैं।
3. श्रुति वाद्य सभा गान के मध्य संगीतज्ञ को की टोन या आधार श्रुति देते हैं।
4. पाश्चात्य संगीत सभा गानों में प्रत्येक रचना एक विशेष ऊंचाई में स्थित होती है जिसे सभी संगीतज्ञों को ग्रहण करना होता है।

6.9

1. कदम, नागपासं, ब्रिज, मनके (टडूनिंग बीड), जीवाली अथवा जवारी, डांड, ग्रीवा, मिलाने की खूंटियां और तार तानपुरे के भिन्न भाग हैं।
2. कदम तानपुरे में गोल आकार का खोखला भाग है जो वाद्य में गूंज प्रदान करता है।
3. तानपुरे का सबसे लंबा भाग डांडधडंडी कहलाता है।
4. नागपासं एक छोटा भाग है जहां से तानपुरे में तार आरंभ होते हैं।
5. सामान्य तानपुरे में चार तार होते हैं।

निर्देशित कार्य कलाप

1. भारत के संगीत वाद्यों के अधिकतम चित्र एकत्र करके उन्हें वर्गीकरण के अनुसार अलग कीजिये।
2. संगीतज्ञों के नामों के उन वाद्यों के साथ जिसमें वे पारंगत हैं, तीन चार्ट बनाइये।
3. संग्रहालय जाकर लोक संगीत से संबन्धित प्राचीन संगीत वाद्यों के चित्र एकत्र कीजिये।